Universe Journal of Education & Humanities ISSN 2348-3067

Volume-5, No. I, Feb.-2018, pp.Hin.-22-25

सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण की भावना का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 सुरेन्द्र सिंह सहायक प्रोफेसर, शिक्षा एवं शोध विभाग,
हिन्दू कालेज, मुरादाबाद उ.प्र. भारत।
श्री नरेश कुमार, शोधार्थी
मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तौड़गड राजस्थान भारत।

सौरमण्डल के ज्ञात ग्रहों में हमारी पृथ्वी पर ही जीवन है, और यह जीवन पर्यावरण की देन है। इस ग्रह पर उपस्थित विभिन्न गैसे, जल, रसायनिक तत्व पर्यावरण की रचना करते हैं। पर्यावरण की जीवन निर्वाही क्षमता सौर ऊर्जा एवं भौतिक रासायनिक तत्वों की क्रमशः अपूर्ण एवं पूर्ण चक्रीय व्यवस्था द्वारा संतुलित रहते हैं। पर्यावरण की जीवन निर्वाही क्षमता तब तक विद्यमान रहेगी जब तक ऊर्जा और पदार्थ की चक्रीय व्यवस्था का संतुलन बना रहता है। यदि यह संतुलन मानवीय त्रृटि से बिगड़ता है तो इस ग्रह पर जीवन विलुप्त हो सकता है। जब से मानव अस्तित्व में आया तभी से उसने प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग प्रारम्भ कर दिया था। धीरे–धीरे मनुष्य का बौद्धिक विकास हुआ, उसकी आबादी बढ़ी, उसने संस्कृति और प्रौद्योगिकी का विकास किया, जिससे प्राकृतिक संसाधनों का अत्याधिक उपयोग किया गया इसका परिणाम यह हुआ कि अत्यधिक प्रदूषक पदार्थ हुये जो धीरे–धीरे वातावरण में मिलते गये। इन प्रदूषित पदार्थों के कारण जैविक चक्र का संतुलन बिगड़ गया जो आज पर्यावरणीय संकट के रूप में समाने खड़ा है। इससे मानव ही नहीं अपितु संम्पूर्ण धरती के जीवों का जीवन संकटग्रस्त है।

मुख्य शब्द– सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय, गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय, पर्यावरण संरक्षण भावना

आवश्यकता एवं महत्व–

जनसंख्या में हो रही तीव्र वृद्धि तीव्रता के साथ औद्योगिक विकास वन कटाव, यातायात वाहनों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि तथा जन साधारण की अज्ञानता तथा अशिक्षा के कारण आज भी पर्यावरण शिक्षा का महत्व दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। बढ़ती हुई निरक्षरता और अज्ञानता के कारण पर्यावरण सुरक्षा और उपायों का भरपूर उपयोग नहीं हो पा रहा है। अज्ञानता तथा अशिक्षा से ग्रसित मनुष्य पर्यावरण की सुरक्षा नहीं कर सकता। पर्यावरण शिक्षा हमें "वसुधैव कुटुम्बकम्" का पाठ पढ़ाती है।

"स्टाकहोम सम्मेलन में यह घोषणा की गई कि वर्तमान और भावी समस्याओं के लिए पर्यावरण की रक्षा एवं सुधार मानवता का अनिवार्य लक्ष्य हो गया है। इसलिए पर्यावरण शिक्षा जवान और बूढ़े, धनी और निर्धन, साक्षर और निरक्षर, ग्रामीणों, किसानों, औद्योगिक, श्रमिकों, नगरीय संभ्रान्तों, अधिकारियों, व्यापारियों, इंजीनियरों प्रबन्धकों और प्रशासकों राजनीतिज्ञों एवं किसान नियोजकों सभी को दी जानी चाहिए। स्कूलों और विश्वविद्यालयों में इसे अनिवार्य शिक्षा के रूप में दिया जाना चाहिए।"

अतः शोधकर्ता ने यह महसूस किया है कि उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण की भावना का होना अति आवश्यक है।

आज आवश्यक है कि पर्यावरण संरक्षण की भावना द्वारा मनुष्यों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए कि वे प्राकृतिक संतुलन बनाये रखने का प्रयास करें छात्रों को प्रत्येक स्तर पर पर्यावरण के स्रोतों के संरक्षण के लिए और उनमें यह आदत के लिए की वे स्वयं पर्यावरण को न दूषित करें, प्रशिक्षित किया जाना चाहिए उनकों इस बात की शिक्षा दी जानी चाहिए कि पयार्वरण संकट के क्या कारण हैं। और उसके क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं। यदि मानव को यह शिक्षा दी जा सकती तो पर्यावरण संकट दूर करने में सहायता मिलेगी।

लगातार जनसंख्या बढ़ रही है। विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों से हमारी पृथ्वी नरक बन रही है। वायुमंडल में आग, धुआँ, गैसें, तेजाबी वर्षा, रेडियोधर्मी पदार्थ आदि तेजी से जमा होने लगे हैं। हम इस वायुमंडल में कितने दिन जी सकेंगे? निश्चित रूप से इस प्रश्न का उत्तर यही है कि हम अपने व्यवहार में परिमार्जन कर, संरक्षण को अपने जीवन का अंग बना ले। अतः प्रारम्भिक स्तर से ही पर्यावरण शिक्षा को नियमित पाठ्यक्रम का अंग बनाया जाये। जिससे विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण की भावना का विकास हो सके।

Scanned by CamScanner

ISSN 2348-3067

अतः यह आवश्यक हो गया है पर्यावरण संरक्षण की भावना के साथ–साथ इसके प्रारम्भिक शिक्षा पाठ्यक्रम से लेकर उच्च शिक्षा तक अनिवार्य पाठ्यक्रम घोषित किया जाये। ताकि भावी पीढ़ी को पर्यावरण के प्रति सचेतक के रूप में स्थापित किया जा सके।

शिक्षा में निम्नलिखित शोधार्थियों ने अपने अध्ययन में पर्यावरण से सम्बन्धित विषयों पर प्रकाश डाला है। जिसमें पी0एम0आई0(1981), थन्गम एन0एन0 (1980), वर्पेन्या, पी0ए0, (1972), मैनअल, एन0वी0(1982), जे0उस0 सक्सेना (1980), ए0वी0 जघोवा, (1980), कोरसिनो–फ्रास्ट, लुज आयोरा (1881), आर0 घोष (2010), एन0 खट्टर (2011), एस0 गोपाल कृष्णनन् (2015) प्रमुख हैं।

समस्या कथन– सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण की भावना का तुलनात्मक अध्ययन

शब्दों का परिभाषीकरण–

1.7.1 सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय–इन विद्यालयों से आशय ऐसे विद्यालयों से है जो राज्य सरकार द्वारा पूर्ण रूप से संचालित हैं। इन विद्यालयों के रखरखाव, शिक्षण, सहायक शिक्षण समग्री, अध्यापक का वेतन व सभी वर्ग के बालकों को मुफ्त शिक्षा प्रदान की जाती है।

1.7.2 गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय–इन विद्यालयों से आशय ऐसे विद्यालयों से है जो राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है। इन विद्यालयों के रखरखाव, शिक्षण, सहायक शिक्षण समग्री, अध्यापक का वेतन व अन्य खर्च विद्यार्थियों द्वारा दिये गये शिक्षण शुल्क से प्राप्त किया जाता है। इनमें केन्द्र सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालय भी हैं जो सी0बी0एस0ई0 एवं आई0सी0एस0ई0 से सम्बद्ध होते हैं।

पर्यावरण संरक्षण भावना

पर्यावरण के प्रति संरक्षण एवं जागरूकता की भावना को पर्यावरण संरक्षण की भावना की संज्ञा दी जाती है।

शोध विधि–वर्तमान शोध पत्र हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरण–प्रस्तुत शोध पत्र हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोगकिया गया है।

चर– स्वतन्त्र चर–विद्यार्थी,
आश्रित चर–पर्यावरण संरक्षण की भावना

शोध के उद्देश्य–

1. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण की भावना का अध्ययन।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की पर्यावरण संरक्षण की भावना का अध्ययन।
3. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की पर्यावरण संरक्षण की भावना का अध्ययन।
4. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण की भावना का अध्ययन।

शोध की मुख्य परिकल्पनाएं –

1. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण की भावना में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की पर्यावरण संरक्षण की भावना में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
3. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की पर्यावरण संरक्षण की भावना में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
4. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण की भावना में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण की भावना का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

(तालिका संख्या–1)

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
					0.01	0.05
सरकारी विद्यालय केविद्यार्थी	100	45.60	6.042	0.773	सार्थक	सार्थक नही
गैर सरकारी विद्यालय केविद्यार्थी	100	44.13	6.110			

तालिकासंख्या–1 के अनुसार सरकारी उ0प्र0 विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के पर्यावरण संरक्षण की भावना का मध्यमान 45.60 एवं मानक विचलन 6.042 प्राप्त हुआ है। जबकि गैर सरकारी उ0प्र0 विद्यालय में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों का मध्यमान 44.13 मानक विचलन 6.110 प्राप्त हुआ है। इन दोनों का क्रान्तिक अनुपात संख्या 0.773 प्राप्त हुआ है। क्रान्तिक अनुपात 0.01 पर सार्थक है परन्तु 0.05 पर सार्थक नहीं है। इससे आशय है कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण की भावना की

Scanned by CamScanner

गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों से कम होती है। अतः हमारी परिकल्पना क्रमांक 1 स्वीकार की जाती है।

सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों की पर्यावरण संरक्षण की भावना का मध्यमान, मध्मान विचलन, क्रान्ति अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

(तालिका संख्या–2)

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
					0.01	0.05
सरकारी उ0प्र0 विद्यालय कोछात्र	100	46.69	6.493	3.00	सार्थक	सार्थक नही
गैर सरकारी उ0प्र0 विद्यालय कोछात्र	100	43.13	6.175			

तालिका संख्या–2 के अनुसार सरकारी उ0प्र0 विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के पर्यावरण संरक्षण की भावना का मध्यमान 46.69 एवं मानक विचलन 6.493 प्राप्त हुआ है। जबकि गैर सरकारी विद्यालय में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों का मध्यमान 44.13 मानक विचलन 6.175 प्राप्त हुआ है। इन दोनों का क्रान्तिक अनुपात संख्या 3.00 प्राप्त हुआ है। क्रान्तिक अनुपात 0.01 पर सार्थक है परन्तु 0.05 पर सार्थक नहीं है। इससे आशय है कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण की भावना की गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों से कम होती है। अतः हमारी परिकल्पना क्रमांक 2 स्वीकार की जाती है।

सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाली छात्राओं की पर्यावरण संरक्षण की भावना का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

(तालिका संख्या–3)

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
					0.01	0.05
सरकारी विद्यालय की छात्रायें	100	45.60	6.042	2.770	सार्थक	सार्थक
गैर सरकारी विद्यालय की छात्रायें	100	45.13	6.120			

तालिका संख्या 3 के अनुसार सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाली छात्राओं का मध्यमान 45.60 एवं मानक विचलन 6.042 प्राप्त हुआ है। जबकि गैर सरकारी विद्यालय में अध्ययन करने वाली छात्राओं का मध्यमान 45.13 व मानक विचलन 6.12 प्राप्त हुआ है। इन दोनों का क्रान्तिक अनुपात संख्या 2.77 प्राप्त हुआ है। क्रान्तिक अनुपात 0.01 एवं 0.05 पर भी सार्थक है इससे आशय है कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाली छात्राओं के पर्यावरण संरक्षण की भावना में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना क्रमांक 3 स्वीकार की जाती है।

सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण की भावना का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

(तालिका संख्या– 4)

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
					0.01	0.05
सरकारी उ0प्र0वि0 के ग्रामीण विद्यार्थी	100	47.56	4.732	5.706	सार्थक	सार्थक
गैर सरकारी उ0प्र0वि0 के ग्रामीण विद्यार्थी	100	45.36	6.078			

तालिका संख्या 4 के अनुसार सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान 47.56 एवं मानक विचलन 4.732 प्राप्त हुआ है। जबकि गैर सरकारी विद्यालय में अध्ययन करने वाले गामीण विद्यार्थियों का मध्यमान 45.36 मानक विचलन 6.078 प्राप्त हुआ है। इन दोनों का क्रान्तिक अनुपात 5.706 प्राप्त हुआ है। प्राप्त मध्यमान व मानक विचलन के अनुसार सरकारी व गैर सरकारी उ0प्र0 विद्यालयों में अध्ययन करने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण की भावना में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना क्रमांक 4 स्वीकार की जाती है।

शोध के निष्कर्ष :–

1. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के पर्यावरण संरक्षण की भावना में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के पर्यावरण संरक्षण की भावना में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के पर्यावरण संरक्षण की भावना में सार्थक अन्तर पाया गया।
4. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के पर्यावरण संरक्षण की भावना में सार्थक अन्तर पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. चौबे, सरयू प्रसाद, मनोविज्ञान और शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. जायसवाल, सीताराम, शिक्षा विज्ञान कोष, अग्रवाल प्रकाशन मेरठ।

Scanned by CamScanner

3. ढौढियाल, सच्चिदानन्द तथा पाठक अरविन्द, शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
4. तिवारी, आदित्य नारायण, शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल प्रकाशन मेरठ।
5. पाठक, पी0डी0, मनोविज्ञान व शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
6. राय, पारसनाथ (1981), अनुसन्धान परिचय, चतुर्थ संस्करण, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा।
7. श्रीवास्तव, डी0एन0, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान, साहित्य प्रकाशन, अस्पताल मार्ग, आगरा।
8. शर्मा, डा0 आर0ए0, शिक्षण अधिगम में नवीन परिवर्तन, सूर्या पब्लिकेशन मेरठ।
9. वर्मा, डॉ0 रामपाल सिह व प्रो0 पृथ्वी सिंह, विद्यालय प्रबन्धन एवं शिक्षा की समस्याएं, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
10. वशिष्ठ, डॉ0 के0के0, विद्यालय संठन एवं भारतीय शिक्षा की समस्याएं लायल बुक डिपो, मेरठ।
11. सिंह, प्रसाद, मनोविज्ञान और शैक्षिक सांख्यिकी के मूल आधार।

Scanned by CamScanner